[Conference- Innovation in Music & Dance :January,2015] ISSN- 2350-0530(O) 2394-3629(P)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i1SE.2015.3439

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

सिने संगीत में शास्त्रीय राग यमन का प्रयोग – एक विचार

भाग्यश्री सहस्त्रबुद्धे
शोधार्थी
राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्व विद्यालय, ग्वालियर

हिन्दुस्तानी संगीत राग पर आधारित है। राग की परिभाषा अलग–अलग विद्वानों ने अपनी–अपनी पद्धति से दी है परन्तु सबका आशय "योऽयं ध्वनिविषेषस्तु स्वर वर्ण विभूषितः रंजकोजन चित्तानां सः रागः कथितो बुधैः" से ही संदर्भित रहा है। अतः यह कहा जा सकता है कि भारतीय संगीत की आत्मा स्वर, वर्ण से युक्त रंजकता पैदा करने वाली राग रचना में ही बसती है। स्वरों के बिल्डिग बॉक्स पर राग का ढाँचा खड़ा होता है। मोटे तौर पर ये माना गया है कि एक सप्तक के मूल 12 स्वर सा रे॒ रे ग॒ ग म म प ध॒ ध नि॒ नि राग के निर्माण में वही काम करते हैं जो किसी बिल्डिंग के ढाँचे को तैयार करने में नींव का कार्य होता है।

शास्त्रकारों ने राग निर्माण के पूर्व थाट रचना का सिद्धान्त प्रतिपादित किया। दाक्षिणात्य पद्धति में 72 थाटों की परिकल्पना की गयी। वहीं उत्तरी संगीत पद्धति ने पं. भातखण्डे के नेतृत्व में दस थाटों की अवधारणा स्वीकार की। दोनों ही पद्धतियों में स्वर से स्पतक, सप्तक से थाट एवं थाट से राग निर्माण की निरंतरता को स्वीकारा गया। इसी आधार पर जिन दस थाटों को उत्तरी पद्धति में मान्यता मिली वे क्रमशः कल्याण (यमन), बिलावल, खमाज, भैरव, पूर्वी, मारवा, काफी, आसावरी, भैरवी, तोड़ी, माने गए।

सिनेमा संगीत जो जनप्रिय है वह भी उक्त राग–रचना के सिद्धान्त से अलग नहीं रहा। भारतीय संगीत चाहे वह शास्त्रीय हो, सुगम हो, अथवा सिनेमा संगीत हो, स्वर रचना के आधार पर गढ़े हुए रागों की ही व्याख्या करता है।

जैसा कि इस आलेख में मेरा उद्देश्य सिनेमा संगीत में शास्त्रीय रागों का प्रयोग स्पष्ट करना है तथापि असंख्य रागों की गणना अनगिनत सिनेमा संगीत में जो की गयी है यहाँ प्रस्तुत करना असंभव है। अतः थाट क्रम में पहला थाट कल्याण एवं उसका मूल आश्रय राग यमन लेकर कुछ फिल्मी गीतों का विश्लेषण मैंने इस आलेख में करने का प्रयास किया है।

सर्वप्रथम में राग कल्याण की पृष्ठभूमि बताना चाहूंगी–

पं. भातखण्डे कहते हैं कि –

सबहि तीवर सुर जहाँ, वादि गंधार सुहायो।
अरु संवादि निखादते, ईमन राग कहायो।।

यमन– यह राग कल्याण ठाठ का आश्रय राग है। इसकी जाति संपूर्ण है। इसमें मध्यम स्वर तीव्र तथा अन्य स्वर शुद्ध लगते हैं। वादी स्वर गांधार और संवादी स्वर निषाद है। इस राग का गायन–समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। यमन राग में जब कभी अल्प प्रमाण में कोमल मध्यम का प्रयोग करते हैं, तब इसे यमन कल्याण ऐसा संयुक्त नाम कोई–कोई विद्वान देते हैं। यह राग सरल व सीधा होने के कारण फिल्मों में बहुत दिखाई देता है। यमन राग को कल्याण का आश्रय राग यदि कहा जाता है तो यह उपपद इसके लिये शोभायमान ही होगा।

रागांग राग कल्याण, कल्याण के समस्त प्रकार का आधार राग है। जिस प्रकार प्रातः के लिये राग भैरव का स्थान है उसी प्रकार सायंकालीन अभ्यास के लिये राग कल्याण महत्वपूर्ण माना जाता है।

यद्यपि इस राग की गायकी का विस्तार तीनों सप्तकों में होता है, परन्तु राग का मुख्य स्वरूप पूर्वांग में होने के कारण पूर्वांग प्रधान रागों में यह प्रमुख माना जाता है। राग का मुख्य स्वरूप इस प्रकार है–

सा, नि॒ रे ग, ग रे सा नि॒ ध॒ नि॒ रे ग, रे ग म(तीव्र) प, प म(तीव्र) रे ग, रे ग म(तीव्र) प म(तीव्र)ग रे सा, ग मं ध नि ध प, म(तीव्र) ध नि सां नि ध नि ऽ ध प, प म(तीव्र) ग, रे ग, नि॒ रे ग म(तीव्र) प म रे ग सा।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

यह शुद्ध राग होने के साथ–साथ रागांग राग भी है और प्रमुख रागांग रागों के सप्तक के पूर्वांग और उत्तरांग क्षेत्र के मुख्य रागांग वाचक स्वर समूह होते हैं जो अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं उस राग के समस्त प्रकार में कहीं न कहीं उसका प्रयोग अवष्य होता है।

उपरोक्त स्वर विस्तार में ध्यान से देखने पर कल्याण राग के रागांग वाचक स्वर समूहों का दर्षन होगा। यथा –

(1) नि॒ रे ग रे सा (2) ग म प मंग रे ग सा
(3) म ध नि, ध प, (4) सां नि ध नि, ध प मं ग
(5) प मं ग मं रे ग, (6) म प ध प

कल्याण अंग के रागों में उपरोक्त रागांग वाचक स्वर–समूहों में से किसी न किसी का वर्चस्व अवश्य होता है। इसके अतिरिक्त वर्जित स्वरों के आधार पर भी कल्याण अंग के रागों का निर्माण होता है। जैसे कल्याण के आरोह में रिषभ व धैवत वर्जित करने से मारू–बिहाग का मूल स्वरूप सामने आयेगा। इस राग का लोकप्रिय सिने संगीत का गीत "दिल जो न कहा सका" फिल्म भीगी रात सन् 1965 का है। मध्यम व निषाद पूर्णतया वर्जित करने से भूपाली राग का आविर्भाव होगा। इस राग का सबसे लोकप्रिय सिनेमा गीत "ज्योति कलश छलके" है। केवल आरोह में मध्यम, निषाद वर्जित करने से राग शुद्ध कल्याण का दर्षन होगा। केवल मध्यम वर्जित करने से कल्याण थाट के सावनी कल्याण तथा केवल अवरोह में मध्यम वर्जित करने में राग चन्द्रकान्त का स्वरूप बनेगा इसी प्रकार कल्याण के आरोह में गंधार और धैवत वर्जित और कामोद का मिश्रण करने से श्याम कल्याण और मध्यम निषाद वर्जित कर राग जैत के कुछ अंष को मिलाने से जैत कल्याण के उत्तरांग के स्वर–समूह में पूरिया का मिश्रण करने से पूरिया कल्याण इत्यादि रागों का सृजन होता है।

इसके अतिरिक्त जब कल्याण राग का अल्प प्रमाण में अन्य रागों में मिश्रण किया जाता है वहाँ कल्याण अंग झलकने लगता है जैसे शुद्ध सारंग, देवगिरि बिलावल, यमनी–बिलाबल, महुवा केदार, नंद, हमीर, गौड़ सारंग इत्यादि। राग नंद का लोकप्रिय फिल्मी गीत "तू जहाँ जहाँ चलेगा, मेरा साया साथ होगा" है।

इस प्रकार यह राग अत्यन्त श्रुति मधुर तथा प्रारम्भिक संगीत शिक्षार्थियों के लिये जितना सरल और सहज है उतना ही गायकी का ज्ञान होने पर इस राग की गायकी की कठिनता का भान होता जाता है।

इस तरह कल्याण थाट का राग यमन शास्त्रीय आधार सिद्ध है। संभवतः इसलिये राग यमन अथवा थाट कल्याण पर आधारित सिने संगीत अधिक लोकप्रिय एवं कर्णप्रिय माना गया।

इस आलेख के उद्देश्य की दृष्टि से अब मैं उन गीतों की संक्षिप्त सूची यहाँ प्रस्तुत कर रही हूँ जिनमें सपष्ट रूप से राग यमन अथवा यमन कल्याण दिखाई देता है।

	गीत	फिल्म
1.	लगता नहीं है दिल मेरा.....	लाल किला
2.	छुपा लो यूं दिल में प्यार तेरा....	ममता
3.	बड़े भोले हो....	अर्धांगिनी
4.	सबेरे का सूरज तुम्हारे लिये....	एक बार मुस्कुरा दो
5.	सप्त सुरन तीन ग्राम....	तनसेन
6.	धड़कते दिल की तमन्ना...	शामा 1961
7.	जरा सी आहट....	अनपढ़
8.	मन रे तू काहे न धीर धरे....	चित्रलेखा
9.	अहसान तेरा होगा मुझ पर....	जंगली
10.	प्यार में होता है–क्या जादू....	पापा कहते हैं
11.	अभी न जाओ छोड़कर....	हम दोनों
12.	तेरे हुस्न की क्या तारीफ करूँ....	लीडर
13.	इंतजार और भी....	चार दिल चार राहें

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

14.	श्री रामचन्द्र कृपालु भज मन..	प्रायवेट वीडियो–फिल्मों में प्रयुक्त
15.	सोचेंगे तुम्हे प्यार करें.....	दिवाना
16.	बीती न बिताए रैना....	परिचय
17.	सीने मे सुलगते है अरमान...	तराना
18.	इस मोड़ से आते हैं....	आँधी
19.	घर से निकलते ही....	पापा कहते हैं
20.	दिल दिया दर्द लिया....	दिल दिया दर्द लिया
21.	नैना लगा के गीत गाके....	भाभी की चूड़ियां
22.	आये हो मेरी जिंदगी में तुम....	राजा हिन्दुस्तानी
23.	निगाहें मिलाने को जी चाहता है....	दिल ही तो है
24.	छुपालो युँ दिल में प्यार तेरा....	ममता
25.	प्रीतम आन मिलो....	मिस्टर एन्ड मिसेस 55
26.	तुम अगर मुझको	दिल ही तो है
27.	तुम मुझे भूल भी जाओ....	छीदी
28.	मौसम है आशिकाना....	पकीजा
29.	चंदन सा बदन.....	सरस्वती चन्द्र

निश्कर्षतः मेरी ऐसी मान्यता है कि "राग" संगीत में रचता बसता है जो हर तरह की विधाओं को अपनी बात कहने की स्वतंत्रता देता है। अगर इस तथ्य परक सत्य को आज का सिनेमा संगीत भी अपना ले तो उस पर लगने वाले अवांछित प्रत्यारोप जिन्हें "शोर", "अनर्गल प्रलाप" जैसी संज्ञाएँ मिल रही हैं समाप्तप्राय हो जावेंगी एवं हमारे सिने संगीत भारतीय संगीत की मूल व्याख्या "मैलॉडी" को सार्थक कर सकेगा।

सन्दर्भ –

1 *क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2, 3 – पं. वि.ना. भातखंडे*
2 *अभिनव गीतांजली भाग–4 – पं. रामाश्रय झा*
3 *संगीत मणि भाग –1 – डॉ. महारानी शर्मा*
4 *निबन्ध संगीत – ल.न. गर्ग*
5 *संगीत निबंधावली – डॉ. हरिषचन्द्र श्रीवास्तव*
6 *गूगल वेबसाईट – फिल्मी गीत संकलन हेतु*
7 *भारतीय सिनेमा – एक अनंत यात्रा– प्रसून सिन्हा*
8 *सिनेमा के सौ बरस – मृत्युंजय*